3. गांवों का बसना

अब हम उस समय पर आ गए हैं, जब लोग खेती करके जीने लगे थे। ऐसी कोई तीन-चार बातों पर चर्चा करो जो खेती करने के बाद लोगों के जीवन में ज़रूर बदली होंगी।

किसानों का गांव

यहां खेती करने वाले एक झुंड के गांव का चित्र दिया है। खेती करने वाले झुंड का यह चित्र शिकारी मानव के चित्रों से कितना अलग दिखता है! पर, शिकारी मानव के दिनों की तुलना में क्या सब कुछ बदल गया है?

चित्र की हर चीज़ को ध्यान से देखो। देखो कि वो शिकारी मानव के समय में भी थी या नई है? इस तालिका में लिख कर बताओ :

चित्र में शिकारी मानव के समय की बातें	चित्र में खेती के बाद की नई बातें
1.	1.
2.	2.
3.	3.
4.	4.

तुम्हारे ध्यान में यह बात आ गई होगी कि झुंड के लोग खेती करने के बाद भी शिकार करके लाते हैं। पर इसमें आश्चर्य की क्या बात है? खेती के वे शुरू-शुरू के दिन थे। तब लोग खेती-बाड़ी के तौर-तरीके सीख ही रहे थे। इतनी खेती नहीं हो पाती थी कि साल का पूरा भोजन उसी से मिल जाए। लोगों को भोजन में मांस की ज़रूरत भी थी। इसलिए खेती कें साथ आसपास के जंगलों से शिकार मार के लाना और फल-जड़ बटोर के लाना भी चलता रहा। पर, पहले की तरह नहीं। पहले मनुष्य अपने भोजन के लिए पूरी तरह जंगल पर **निर्भर** था। अब वह खेती पर निर्भर रहने लगा था।

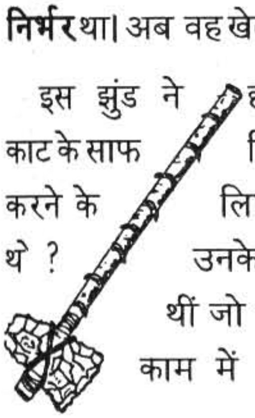

इस झुंड ने हर साल धीरे-धीरे जंगल काट के साफ किए थे। पर, इस काम को करने के लिए उनके पास कौन से औज़ार थे ? उनके पास पत्थर की कुल्हाड़ियां थीं जो लकड़ी के हत्थों में फंसा कर काम में लाई जाती थीं। पत्थर की कुल्हाड़ियों से घने जंगल काटने में बहुत समय लगता था और बहुत कठिनाई होती थी। उन दिनों लोहा, तांबा जैसी धातुओं का इस्तेमाल शुरू नहीं हुआ था। इसलिए ज़्यादा अच्छे औज़ार इस झुंड के पास नहीं थे।

झुंड के सब लोगों ने बहुत मेहनत से काम किया। उन्होंने जंगल काट कर जलाए। मिट्टी के बीच पड़े कंकड़-पत्थर भी साफ किए। तब जा कर ज़मीन खेती के लायक बनती गई। झुंड के सब लोगों की मेहनत से खेती का इलाका फैलता गया। तुमने चित्र में देखा कि गांव के आसपास खेत हैं और जंगल दूर तक नहीं दिख रहे हैं।

खेती करने वाले लोग शिकार क्यों करते थे?

झुंड के लोगों को खेती फैलाने में समय क्यों लगा?

एक जगह बसना

नदी किनारे गांव था। हर साल बरसात के दिनों में नदी में बाढ़ आती थी । बाढ़ का पानी खेतों में भर जाता था । कुछ दिनों में बाढ़ का पानी तो उतर जाता था, पर खेतों में नई मिट्टी बिछी रह जाती थी। हर साल इस नई मिट्टी पर अच्छी फसल उग आती थी। साल-दर-साल इन्हीं खेतों से बारहों महीनों का अनाज, दाल मिलने लग गया था। अब भोजन की तलाश में जगह-जगह घूमने की ज़रूरत नहीं रही थी।

लोग अब घूम भी नहीं सकते थे क्योंकि खेती की देखभाल करनी पड़ती थी।

बोनी से लेकर कटाई तक खेती की देखरेख में क्या-क्या करना होता है, बताओ।

नदियों, तालाबों और नालों के आसपास गांव बसते गए। कई-कई सालों तक लोग उनमें रहने लगे। लोग अब लंबे समय तक एक ही जगह बसकर रहने लगे।

शुरू के इन गांवों में 100 से 150 लोगों की आबादी रहा करती थी। यह आज के गांवों की तुलना में तो कम है। पर शिकारी मानव के झुंड की तुलना में ज़्यादा लोग एक साथ एक जगह रहने लगे थे।

शुरू-शुरू के घर

खुदाई करने पर हमें शुरू-शुरू के घरों के **अवशेष** (यानी बचे हुए निशान) मिलते हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है कि अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरह के घर बने। कहीं लोग मिट्टी को खोद कर गड्ढे में घर बनाते थे। कहीं घास-फूस के भी घर बनाते थे। नर्मदा किनारे घर कैसे बनते थे – इस बात का अन्दाज़ा तुम यहां दिए गए चित्रों को देख कर लगा सकते हो।

शुरू-शुरू में घर बनाने का एक तरीका

लोग जंगल से ये चीज़ें काट के ले आते और मिट्टी इकट्ठी करके पानी में घोल लेते।

सबसे पहले वे ज़मीन साफ कर के कंकड़-पत्थर हटा देते और फर्श एक सा कर देते। फिर ज़मीन में गड्ढे खोद कर लकड़ी के खम्भों को गाड़ देते–

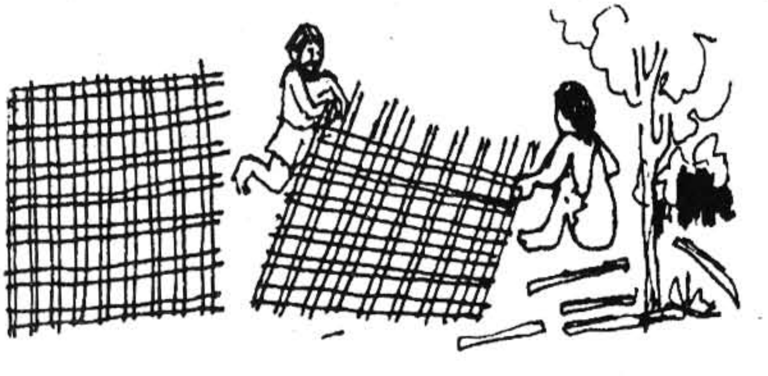

फिर बांस की खपच्चियां बनाते। खपच्चियों को बुन कर टट्टे तैयार करते।

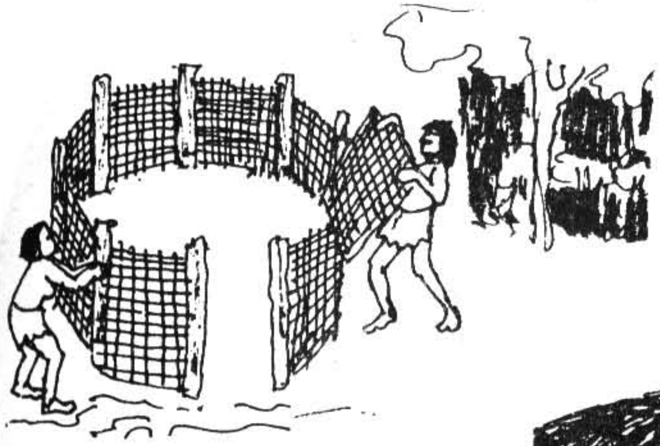

टट्टों को खंभों के साथ बांध देते।

फिर बांस की खपच्चियों से छत बनाते।
उसके ऊपर घास बिछा कर बांध देते।

फिर छत को खम्भों पर चढ़ा कर कस के बांध देते।
टट्टों पर अन्दर और बाहर से मिट्टी का लेप कर देते। फर्श भी मिट्टी से लीप देते।

क्या तुम्हारे गांव में भी कुछ घर इस तरह बनाए जाते हैं?

याद करो शिकारी मानव कैसे रहता था?

शिकारी मानव अपने रहने का इतना पक्का इंतज़ाम नहीं करता था, जितना खेती करने वाले लोग करने लगे।

तुम्हें क्या लगता है – शिकारी मानव को ऐसे मज़बूत घर बनाने की ज़रूरत क्यों नहीं पड़ती थी?

खेती करने वाले लोगों को मज़बूत घरों की ज़रूरत क्यों थी?

अनाज जोड़ के रखना

खेती करने वालों को कई नई बातों का सामना करना पड़ा। हर साल फसल की कटाई के बाद एकदम अनाज का ढेर लग जाता था। पानी से, कीड़ों से और चूहों से अनाज बचाना था। इस अनाज को कई महीनों तक खाने के लिए **सुरक्षित** रखना ज़रूरी था।

अनाज, दाल, तिल जैसी चीज़ें बिना सड़े कितने दिन रह सकती हैं?

शिकारी मनुष्य का भोजन कितने दिन तक बिना सड़े रह सकता था?

सामान भर के रखने की ज़रूरत किसे ज़्यादा थी– शिकारी मानव को या खेती करने वालों को?

शिकारी मानव का काम तो पतली टहनियों की टोकरियों से, खाल की पोटलियों से या पत्तों के दोनों से चल जाता था। पर खेती की शुरुआत के बाद अनाज भर के रखने के लिए मनुष्य को बड़ी और मज़बूत चीज़ें बनानी पड़ीं।

लोगों को बांस या टहनियों की छोटी टोकरियां

बुनना तो आता ही था। अब उन्होंने बड़ी टोकरिया बुनीं। टोकरियों पर चिकनी मिट्टी का लेप किया। फिर उन्हें धूप में सुखाया या आग में पकाया। आग में टोकरी तो जल जाती थी पर मिट्टी का खाका पक्का बन जाता था।

अनाज भरने के बर्तन बनाने के लिए एक और तरीका भी अपनाया गया। इसके लिए मिट्टी को अच्छी तरह गूंथ लिया जाता था। फिर मिट्टी को हाथों के बीच मल कर लम्बा सा रस्सा जैसा कर लिया जाता था। मिट्टी के लम्बे रस्से से एक गोल घेरा बनाया जाता था। फिर उस पर एक-एक कर के घेरा चढ़ाते जाते थे। इस तरह यह घेरा एक बड़े घड़े जैसा बन जाता था। इसमें अनाज भर कर रख देते थे।

क्या तुम समझा सकते हो कि शिकारी मानव के झुंड ने बड़ी और पक्की टोकरियां क्यों नहीं बनाई थीं?

आज-कल अनाज किन चीज़ों में भर कर रखा जाता है?

भोजन पकाने की नई चीज़ें

खेती करने के बाद लोग अनाज ज़्यादा खाने लगे। जिन लोगों ने पशुपालन भी शुरू कर दिया था, उनके भोजन में दूध भी जुड़ गया था। दूध, अनाज, दाल पकाने के लिए मनुष्य को नई चीज़ें बनानी पड़ीं।

शिकारी मानव मांस को आग पर लटका के भून लेता था। वह फल, कन्द-मूल कच्चे खा लेता था। जंगली अनाज के थोड़े बहुत दाने आग में भुन जाते थे या पानी में भिगो कर खाए जाते थे। शिकारी मानव ने खाना पकाने के लिए बर्तन नहीं बनाए थे।

खेती करने वाले लोगों ने अनाज, दाल, दूध पकाने के लिए कई तरह के बर्तन बनाए। लोग हाथ से मिट्टी के बर्तन बनाने लगे। इन बर्तनों को वे धूप में सुखा लेते थे या आग में पका लेते थे। उन दिनों चके की खोज नहीं हुई थी। इसलिए आज जिस तरह चके पर मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं उस समय नहीं बनाए जा सकते थे। जब चके की खोज हुई तो गांव के लोग चके पर सुन्दर बर्तन भी बनाने लगे।

अनाज को कूटने और पीसने के लिए भी कुछ इन्तज़ाम करना ज़रूरी था। इस काम के लिए सिल-बट्टे का इस्तेमाल होने लगा।

आज-कल अनाज कैसे पीसा जाता है?

सिलबट्टा आज किस काम में आता है?

एक और समस्या भी थी। बर्तन को आग पर रखने से आग बुझ जाती थी। लोगों ने आग के दोनों तरफ जगह ऊँची करनी शुरू की जिससे उस पर ठीक से बर्तन टिकाए जा सकें। इस तरह चूल्हे बनने लगे।

सोच कर बताओ कि अगर आज चूल्हा और सिलबट्टा न हों तो हमारे खाने की चीज़ों में क्या-क्या कमी आ जाएगी?

शुरू के गांवों के निशान

जैसे शिकारी मानव के निशान मिलते हैं वैसे ही शुरू के गांवों की बची-खुची चीज़ें भी मिलती हैं।

क्या तुम्हें याद है कि शिकारी मानव के क्या निशान मिलते हैं?

शुरू के गांव जहां-जहां थे, वहां खोदने पर लीपे हुए फर्श मिलते हैं, तरह-तरह के मिट्टी के बर्तन मिलते हैं, चूल्हे के हिस्से मिलते हैं, पत्थर के सिलबट्टे मिलते हैं, बारीक पत्थरों के औज़ार मिलते हैं, घिस कर चमकाई हुई पत्थर की कुल्हाड़ियां मिलती हैं। यही नहीं, अनाज के जले हुए कुछ दाने भी अब तक बचे रहे हैं। पालतू जानवरों की हड्डियां भी वहां पाई जाती हैं। कहीं-कहीं मिट्टी की छोटी मूर्तियां भी निकल

आती हैं। ये शायद उन लोगों की देवियों की मूर्तियां थीं।

इतनी चीज़ें आज भी बची हुई मिल जाती हैं। इन्ही चीज़ों से हमें उन लोगों के बारे में पता चलता है। फिर भी शुरू के गांवों की बहुत सी चीज़ें समय के साथ **नष्ट** हो गई हैं।

क्या तुम बता सकते हो कि शुरू के गांवों की किन चीज़ों के निशान आज नहीं मिल सकते हैं?

अभ्यास के प्रश्न

1. खेती करने वाले लोग घर क्यों बनाने लगे?
2. खेती करने वाले लोगों को भोजन की तलाश में घूमने की ज़रूरत क्यों नहीं रही?
3. (क) खेती करने वाले लोगों को इन चीज़ों की ज़रूरत क्यों थी –
    1. खाना पकाने के बर्तन
    2. अनाज रखने के बड़े बर्तन
    3. चूल्हा
    4. सिलबट्टा

   (ख) इन चीज़ों के बगैर कैसे काम चलाया जा सकता है? समझाओ।
4. बोमा-गोमा का झुंड भी एक जगह रहता था और खेती करने वालों का झुंड भी एक जगह बस कर रहता था। फिर भी दोनों झुंडों में कई फर्क हैं। कोई तीन फर्क सोच कर लिखो।
5. इस चित्र में बहुत सी चीज़ें दिख रहीं हैं। कौन सी चीज़ें हैं जो शिकारी मानव की नहीं हो सकतीं? कौन सी चीज़ें शिकारी मानव और खेती करने वाले लोग- दोनों की हो सकती हैं? अलग-अलग पहचान कर निशान लगाओ।

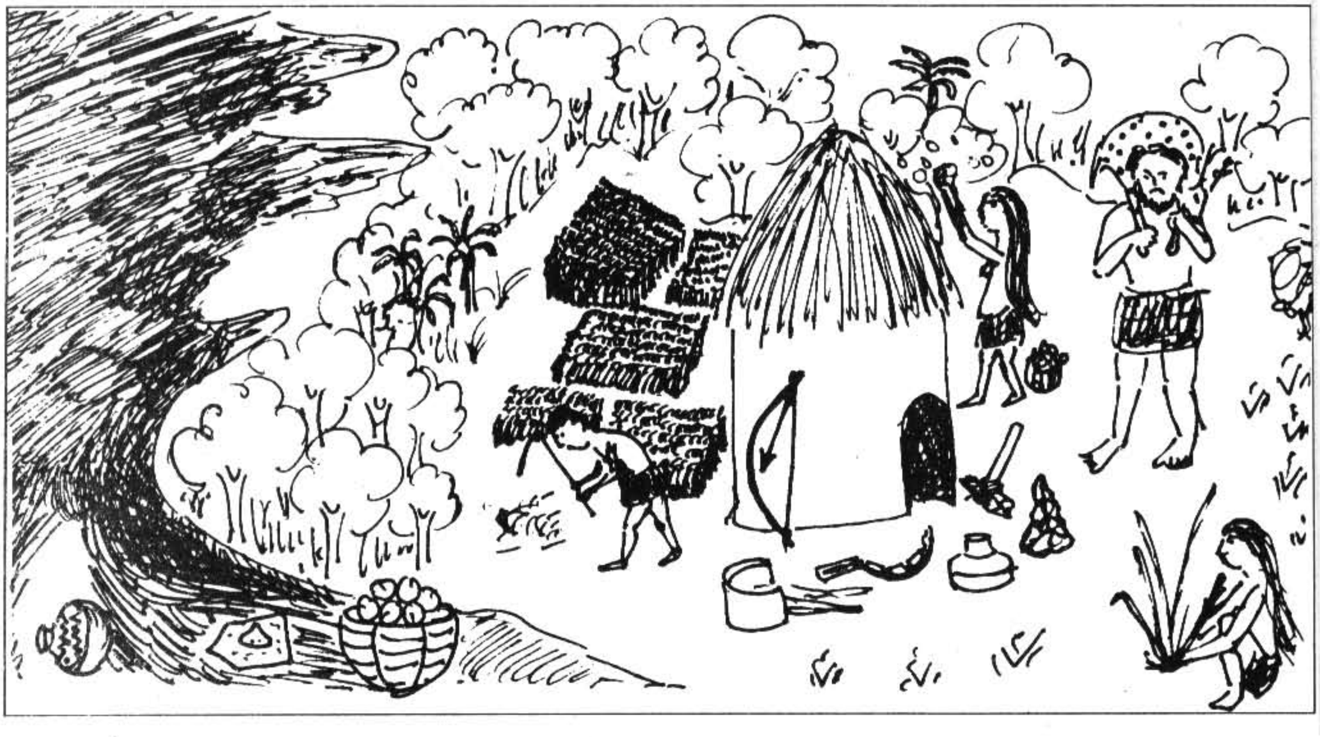

6. बहुत समय बीता। शुरू का गांव कैसा होता था, तुम जानते हो। सैकड़ों सालों बाद वह गांव ऐसा दिखने लगा-

क. इन सैकड़ों सालों में गांव में क्या-क्या बदला, ढूंढो ।

ख. अगर तुम इसे आज के गांव का चित्र बनाना चाहो तो इसमें और क्या-क्या जोड़ोगे? चित्र में जोड़ कर दिखाओ ।

7. ज़मीन खोदने पर शुरू के गांवों के निशान मिलते हैं। एक बार ये निशान मिले –

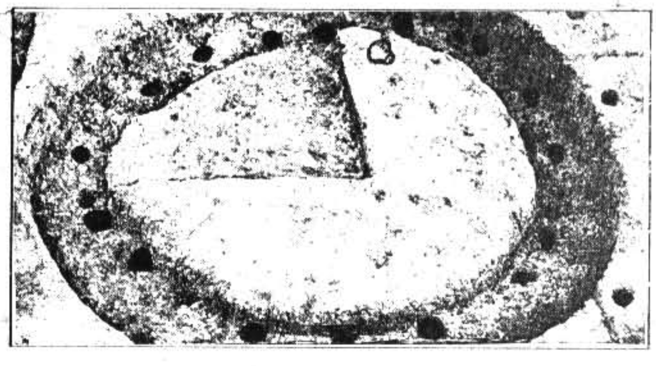

क. क्या तुम पहचान सकते हो कि यहां पहले क्या रहा होगा?

ख. अगर आज से कई हज़ार साल बाद तुम्हारे स्कूल के भवन के निशान ज़मीन में दबे मिलें, तो कैसे दिखेंगे? चित्र बना कर बताओ ।

8. क्या इस पाठ से शुरू के गांवों के बारे में सारी बातें पता लग जाती हैं ?
क्या तुम्हारे मन में ऐसे कुछ सवाल हैं जिनका उत्तर पाठ में नहीं है ?
तुम अपने सवाल **सवालीराम** को चिट्ठी लिख कर पूछ सकते हो ।